महर

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

1] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया, शर्तो में से वो शर्त पूरी की जाने के लायक है जिस्के ज़रिए तुम औरतों की इज़्ज़त के मालिक बने हो.

_बुखारी मुस्लिम की रिवायत का खुलासा | रावी उकबा बिन आमिर रदी.

2] हजरत उमर बिन खत्ताब रदी ने फरमाया, ऐ लागो औरतों के भारी-भारी महर ना बांधा करो, इसलिये की अगर दुन्या में ये कोई बडाई और इज़्ज़त की चिझ अल्लाह की निगाह में होती या कोई मुत्तकियाना काम होता है तो इस्के सबसे ज़्यादा हकदार रसूलुल्लाहﷺ थे लेकिन मुझे नहीं मालूम की रसूलुल्लाहﷺ ने बारह औकिया से ज़्यादा पर किसी औरत से निकाह किया हो, या अपनी लडकियों में से किसी लडकी की शादी की हो. हजरत उमर रदी जिस चिझ से रोक रहे है वो ये है की लोग खानदानी शराफत के गुरूर की वजह

से भारी भारी महर मुकर्रर कर देते है जिन्का अदा करना उन्के बसमे नहीं होता और फिर उन्के गले की फासी बन जाती है. इसलिये हजरत उमर रदी मुसलमान खानदानों और बस्तियों को इस तरह की शेखी से रोकते है और सादगी की शिक्षा देते है और रसूलुल्लाहﷺ जिन्दगी का अमली नमूना पेश फरमाते है.

एक औकिया साढे दस तोला चाँदी के बराबर होता है खुद रसूलुल्लाहﷺ ने आमतौर से जिस औरत से निकाह किया या अपनी लडकियो का निकाह कराया उस्से ज़्यादा महर रसूलुल्लाहﷺ ने नहीं बांधा ये उम्मत के लिए एक अमली नमूना है. रहा उम्मे हबीबा रदी का महर जो इस्से बहुत ज़्यादा था तो ये महर हबश के बादशाह नज्जाशी ने मुकर किया था और उसी ने अदा किया था, निकाह गायबाना में हुआ था.

_तिर्मिजी की रिवायत का खुलासा.

3] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया, बेहतरीन महर वो है जो मामूली हो. यानी भारी महर खानदानों में बडी मुश्किलें पैदा

कर देता है, बीवी रहना नहीं चाहती और मियां रखना नहीं चाहता लेकिन तलाक नहीं देते इसलिये की फिर महर का मसला उठ खडा होगा जिस्का अदा करना उन्की बरदाश्त से बाहर है नतीजा ये होता है की घर दोनों के लिए जहन्नम बन जाता है.

_नैनुल ओतार की रिवायत का खुलासा | रावी उकबा बिन आमिर रदी.